

पच्चक्खाण

प्रभात के पच्चक्खाण

१. नवकारसी

उग्गए सूरे नमुक्कार-सहिअं, मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं-
असणं, पाणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, महत्तरा-
गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.

२. पोरिसी / साड्ड-पोरिसी / पुरिमड्ड / अवड्ड

उग्गए सूरे पोरिसिं / साड्ड-पोरिसिं / सूरे उग्गए पुरिमड्ड / अवड्ड
मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं- असणं, पाणं,
खाइमं, साइमं अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, पच्छन्न-कालेणं, दिसा-
मोहेणं, साहु-वयणेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.

३. आयंबिल / नीवी / एकासणा / बियासणा

उग्गए सूरे नमुक्कार-सहिअं / पोरिसिं / साड्ड-पोरिसिं / सूरे उग्गए
पुरिमड्ड / अवड्ड मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ उग्गए सूरे चउव्विहंपि
आहारं- असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा गारेणं,
पच्छन्न-कालेणं, दिसा-मोहेणं, साहु-वयणेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-
वत्तिया-गारेणं, आयंबिलं / निव्वि विगईओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणा-भोगेणं,
सहसा-गारेणं, लेवा-लेवेणं, गिहत्थ-संसट्ठेणं, उक्खित्त-विवेगेणं,
पारिट्ठावणिया-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं, एगासणं
बियासणं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं- असणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणा-
भोगेणं, सहसा-गारेणं, सागरिया-गारेणं, आउंटण-पसारेणं, गुरु-अब्भुट्ठाणेणं,
पारिट्ठावणिया-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं, पाणस्स
लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहलेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण
वा वोसिरइ.

भूतकाल के भार के साथ भविष्य की गति सुखद नहीं होती.

४. तिथिविहार उपवास / पाणहार

सूरे उग्गाए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ तिथिविहंपि आहारं-- असणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, पारिट्ठावणिया-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं, पाणहार पोरिसिं / साड्ढ-पोरिसिं सूरे उग्गाए पुरिमड्ढ / अवड्ढ मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, पच्छन्न-कालेणं, दिसा-मोहेणं, साहु-वयणेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहलेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरइ.

५. चउविहार उपवास

सूरे उग्गाए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं-- असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, पारिट्ठावणिया-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.

शाम के पच्चक्खाण

१. पाणहार

पाणहार दिवस-चरिमं पच्चक्खाइ अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.

२. चउविहार उपवास

सूरे उग्गाए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं-- असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.

३. चउव्विहार

दिवस-चरिमं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं-- असणं, पाणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणा- भोगेणं, सहसा-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.

बढोते से अच्छे कार्य पहले असंभव लगते हैं.

४. तिविहार

दिवस-चरिमं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं-- असणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.

५. दुविहार

दिवस-चरिमं पच्चक्खाइ दुविहंपि आहारं-- असणं, खाइमं अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.

६. देसावगासिक

देसावगासिक देसावगासिअं उवभोगं परिभोगं पच्चक्खाइ अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्व-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरइ.



पच्चक्खाणेणं भंते! जीवे किं जणयइ?

पच्चक्खाणेणं आसवदारं निरुंभई

भगवन्! पच्चक्खाण से जीव को क्या प्राप्त होता है?

गौतम! पच्चक्खाण से जीव (दुःख के कारणरूप ऐसे कर्मों के आगमनरूप) आश्रव के द्वारों को अवरुद्ध कर देता है.

तवेण भंते! किं जणयइ?

तवेणं वोदाणं जणयइ

भगवन्! तप से जीव क्या प्राप्त करता है?

गौतम! तप से जीव (पूर्व के उपाजित कर्मों का नाश कर के) व्यवदान (आत्मविशुद्धि केवली अवस्था) को प्राप्त करता है.

वोदाणेणं भंते! किं जणयइ?

वोदाणेणं अकिरियं जणयइ. अकिरियाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाएइ, सव्वदुक्खाणमंतं करेइ.

भगवन्! व्यवदान से जीव क्या प्राप्त करता है?

गौतम! व्यवदान से जीव (मन-वचन-काया के योगों की) अक्रियता को प्राप्त करता है. अक्रियता वाला हो जाने के बाद वह सिद्ध होता है, बुद्ध होता है, मुक्त होता है, परिनिर्वाण को प्राप्त होता है और सर्व दुःखों का अंत कर देता है.

दो फेक्टरी कभी बंद न करो! मन की आईस फेक्टरी और जवान की सुगह फेक्टरी.